सतत या नित्य या अखंडित भक्ति के लिए पहले तो भगवान को अपना प्रिय मानना है। मन से सोचना है कि वो ही हमारा है। हर जन्म में वो ही हमारे कर्मों के अनुसार फल देता है और ये आशा लगाये जीव की ओर बगैर पलक भंजे देखते रहता है कि पता नही जीव कब शरणागत हो जाय। जिस क्षण जीव शरणागत होगा उसी क्षण बहुत सारे काम करने है। उसके त्रिदोष, त्रिकर्म, पंचक्लेष, पंचकोष, अनंत जन्मों के पाप पुण्य समाप्त करके उसे दिव्यानंद से मालामाल कर देना है।
अंतःकरण में दो पक्षी रहते है, एक जीव ओर एक भगवान। एक पक्षी (जीव) कर्म करता है एवं सुख दुःख का अनुभव करता है। दूसरा पक्षी (भगवान) कर्मफल देता है और जीव की ओर देखता रहता है।

मन का काम है सोचना। मन के सोचने एक तरीका होता है। मन हमेशा लिंक बनाके सोचता है। जैसे मानो आप श्रीकृष्ण की ध्यान कर रहे हो कि उनके बाल मनमोहक है, उनकी आँख बडी सुंदर है, तो मन कैसे लिंक बना सकता है देखते है। बिबी की आँख ऐसी नही है। लेकिन उस व्यक्ति की आँख पर काला चष्मा था। उस दुकान पर काला चष्मा डालकर डकैती हुअी थी। उस मुव्ही में चार लोगों ने मिलकर ऐसी डकैती डाली थी। लेकिन वो जगह बढिया थी। समुंदर के किनारे पर सुंदर घर था। मेरे घर में वाशिंग मशीन रिपेअर करवाना है.....। ये सब इतनी स्पीड से होता है कि आपको पता भी नही चलता कि मैं तो श्रीकृष्ण का ध्यान कर रहा था, ये वाशिंग मशीन कहा से दिमाख में आया?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

लिंक कैसे बनी इस पर यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करेंगे तो मन पर कंट्रोल कर के भगवान को याद करना

आसान हो जाएगा। क्योंकि जिस लिंक से मन भगवान से दूर गया था, उसी लिंक से उल्टी दिशा में वो वापस भगवान का ध्यान करने लगेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

इसके अलावा भगवान की याद बनाए रखने के लिए और भी तरीके है जैसे मन भगवान का ध्यान करते करते ऐसी जगह पहुँच गया जो आपको अच्छी लगती हो, तो वहाँ श्रीकृष्ण को भी अपने साथ ले जाओ, उनके साथ मन भाया प्यार का अनुहार करो। आपको ड्राइविंग अच्छी लगती है? आप मन से बढ़िया सी बढ़िया बीएमडब्लू चलाओ बगलवाली सीट पर श्रीकृष्ण को बिठा दो, उनसे बाते करो। जहा भी मन जाय वहा किसी ना किसी प्रकार से कभी श्रीकृष्ण को कभी श्रीराधा को कभी दोनों को सम्मिलित करो। कभी सोचो वो हमे बाहों में ले रहे है, हमसे प्यार भरी मिठी बातें कर रहे है। कभी सोचो वो हमसे दूर है और रो कर उनको पुकारो जैसे बच्चा मां को पुकारता है।

मन ने कुछ भी सोचा तो तुरंत सोचो कि तुम्हारे मन की बात भगवान ने जान ली क्योंकि उसी मन में तो भगवान का निवास है।

चाहे जैसे भी हो मन को हमेशा, सतत, नित्य भगवान में उलझाये रखना पडेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132